सत्यांश

पाँच राज्यों - उतर प्रदेश, उतराखंड, पंजाब, गोवा, मणिपुर में से उतर प्रदेश की चुनावी प्रक्रिया सबसे लंबी खिंचने के कारण वहाँ चुनाव जितने-जिताने वाले सारे नुस्खों का इस्तेमाल लाजिमी था। इसी सिलसिले में चुनाव प्रचार के केंद्र में खुद चौपाया गदहा तो नहीं, पर उसके लिए प्रयुक्त होने वाला समूहवाचक शब्द गधा का अनायास इस्तेमाल हुआ, वह भी सर्वोच्च दलनायकों - भाजपा नेता व भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी और समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष व उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री अखिलेश यादव द्वारा। ऐसा नहीं कि किसी गधे ने कोई गलती कर दी हो, जिससे सबका ध्यान उसकी तरफ एकाएक चला गया हो। न तो गधों ने कोई ऐसा काम किया और न ही वे खुद चुनाव प्रचार में कूदे।

अमेरिका की डेमोक्रेटिक पार्टी की तरह भारतवर्ष के राष्ट्रीय या क्षेत्रीय दल तो क्या, किसी गुमनाम पार्टी ने भी अपना संकेतक चुनाव-चिह्न गधे को नहीं बनाया है। अमेरिका वाले गदहे को प्रतीक-चिह्न बना सकते हैं, क्योंकि उन्हें इनमें अथक परिश्रम की क्षमता दिखती है। वे खुद भी शोधवृति वाले हैं, इसलिए आगे हैं, परिश्रम और ईमानदारी पर उनका व्यावहारिक भरोसा है। वहाँ गधे को चुनाव-चिह्न के तौर पर अपनाना-स्वीकारना आसान है, जबकि भारतीयों को गदहे कर्मठता की बजाय मूर्खता का पर्याय अधिक लगते हैं। गुजरात सरकार ने जरूर अपने ब्रांड एंबेस्डर अमिताभ बच्चन के माध्यम से गदहों को विज्ञापन में स्थान दिया है, लेकिन वहाँ भी इनका उपहास झलकता है।

गदहा कर्मठ व वफादार प्राणी है, काम में बेवफाई नहीं करता। इसे परंपरागत तौर पर धोबी तथा कहीं-कहीं कुम्हार लोग पालते हैं और इससे कपड़े व मिट्टी के बोझ ढोने के लिए उपयोग में लाते हैं। इस प्रकार गदहे से बहुत कम लोगों का ही साबका पड़ता है। शहरों एवं नगरों-महानगरों के बूढ़े-बच्चे या तो चिड़ियाघरों में या फिर तस्वीरों के माध्यम से ही इससे वाकिफ हो पाते हैं। वैसे 'क' से कलम, 'ख' से खरगोश, 'ग' से गधा शुरुआती नर्सरी के दिनों में ही पढ़ाया जाता है। जो लोग गदहों के प्रत्यक्ष दर्शन से वंचित रहे हैं, वे भी तस्वीरों के माध्यम से जानते आए हैं कि गधा नाम का कोई चार पैरों वाला जानवर होता है जो देखने में घोड़े व खच्चर से मिलता-जुलता, दोनों के बीच का लगता है। दूर से देखने पर एक को दूसरा समझ लेने का भ्रम भी पैदा होता है।

गदहा व खच्चर दोनों ही बोझ ढोने में माहिर होते हैं, लेकिन गदहा ध्येयनिष्ठ ज्यादा होता है, बदमाशी व शरारत नहीं करता और धूर्त, चालाक जानवर नहीं माना जाता, कुछ अपवादों को छोड़कर। यह अवसरपरस्त नहीं होता, दबते-मरते भी काम करता है। खच्चर का शाब्दिक मतलब बदमाश भी होता है। लगता है, इसीलिए बदमाशों को खच्चर भी कहा जाता है। जब किसी व्यक्ति को मंद बुद्धि, निपट बुद्धू, अव्वल किस्म का बेवकूफ, मूर्ख, जाहिल, गँवार अलग-अलग या एक साथ कहकर अव्यक्त-असीमित क्षोभ तथा टीस उतारनी होती है, तो

उसे गदहा संबोधित किया जाता है। यह जबर्दस्त बेवकूफी को अभिव्यक्त करने वाला पुख्ता प्रामाणिक शब्द है। बेवकूफी के सारे पर्याय मिलकर भी गदहा शब्द का सानी नहीं रखते, गदहा जितना वजन नहीं रखते, गदहा की बराबरी नहीं कर पाते।

गधा का एक नाम वैशाखनंदन भी है। वैशाख महीने में सब ओर रबी फसल कटने के बाद तथा अत्यधिक गर्मी के कारण चारे की हरियाली खत्म हो जाती है, सर्वत्र सूखा ही सूखा दिखाई देता है। तब गदहा चरते-चरते पीछे मुड़कर देखता है, तो उसे विश्वास होता है कि उसने ही सबको खाकर समाप्त कर दिया है। इसी विश्वास के कारण वह मोटा हो जाता है, जबकि सर्वत्र हरियाली के समय ज्यादा चारा उपलब्ध रहने व उसे खाने के बावजूद वह दुबला रहता है, खाते रहने के बावजूद उसे लगता है कि उसने कुछ खाया ही नहीं है। इस प्रकार यह वैशाख के सूखेपन में आनंदमग्न व संतुष्ट रहता है, कम खाने के बावजूद अघाया महसूस करता है।

गदहे का लोक समाज में काफी सम्मान भी हैं। गदहा का 'ऋग्वेद' से लेकर 'ऐतरेय ब्राह्मण' तक में उल्लेख मिलता है। किसी यात्रा पर जाने के ऐन मौके पर गदहा बोल दे या बोलने लगे, तो समझ जाइए कि काम न केवल बनेगा, अपितु आशातीत परिणाम देगा। गदहे का बोलना शुभ होता है कार्यारंभ के समय। होली में हँसी-मजाक, उपहास व बेइज्जती करने-कराने के लिए भी इसकी सवारी कराई जाती है। अमूमन शांत रहकर अपने धुन में लगे रहने वाला यह अद्भुत प्राणी है। वैशाखनंदन

गदहा अपने अवगुणों के कारण नहीं, वरन् आदमी को गाली देने के लिए प्रयुक्त होने के कारण ज्यादा बदनाम है। यह अचंभे की बात है कि जो अवगुण इसमें हैं ही नहीं, उन्हीं के लिए गदहा कह-कह कर आदमियों को गाली दिया जाता है। गधा को गदहा कहने पर वे क्या करेंगे, लेकिन आदमी को गदहा कहने पर वह बिदकता है, क्योंकि वह गदहा नहीं है। आदमी कैसा भी हो, उसे गदहा कहना गदहों का अपमान है या फिर आदमियों का - यह ज्वलंत प्रश्न है। क्या जानवरों को अपमानित करने का नैसर्गिक हक आदमी को हासिल है? अगर नहीं, तो फिर आदमी को गदहा कहने का क्या औचित्य है?

के रूप में इसका जीवन उपभोग की बजााय संतुष्टि के महत्व वाले दर्शन का संदेश देता है।

गदहा अपने अवगुणों के कारण नहीं, वरन् आदमी को गाली देने के लिए प्रयुक्त होने के कारण ज्यादा बदनाम है। यह अचंभे की बात है कि जो अवगुण इसमें हैं ही नहीं, उन्हीं के लिए गदहा कह-कह कर आदमियों को गाली दिया जाता है। गधा को गदहा कहने पर वे क्या करेंगे, लेकिन आदमी को गदहा कहने पर वह बिदकता है, क्योंकि वह गदहा नहीं है। आदमी कैसा भी हो, उसे गदहा कहना गदहों का अपमान है या फिर आदमियों का - यह ज्वलंत प्रश्न है। क्या जानवरों को अपमानित करने का नैसर्गिक हक आदमी को हासिल है? अगर नहीं, तो फिर आदमी को गदहा कहने का क्या औचित्य है?